साहित्य संहिता

Available at http://sahityasamhita.org/

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 0
January 2017

भूमंडलीकरण:साहित्य और संस्कृति

शोध आलेख

नाम : नवीन

विषय : भूमंडलीकरण : साहित्य और संस्कृति

E-mail: naveenravit0007@gmail.com

शोध संक्षेप :– किसी भी शोध विषय और शोध की प्रासंगिकता उसके समकालीन प्रश्नों और मौलिकता के गुण की मोहताज होती है इसी ध्येय को लेकर, भूमंडलीकरण के स्वरूप पर विचार करते हुए भूमंडलीकरण और साहित्य के संबंध को आधार बनाकर नवीन संभावनाओं हेतु मौलिक विमर्श किया जा सकता है।

भूमंडलीकरण भूमंडल के एकीकरण संबंधी अवधारणा है जो समग्रता के एकीकरण को लेकर आगे बढ़ रही है। इसका मुख्य लक्ष्य समस्त विश्व को एक व्यवस्था, एक परिवार, एक ग्राम में बदलना है।

भूमंडलीकरण मूलतः अर्थशास्त्र संकाय से जुड़ा एक पारिभाषिक शब्द है जिसके पीछे समष्ठि अर्थशास्त्र की एक अर्थनीति है। जिसमें समस्त विश्व को एक समरूप अर्थव्यवस्था के रूप में परिभाषित किया जाता है। टॉम जी पामर इसे निम्न रूप से परिभाषित करते हैं।

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 0
January 2017

''सीमाओं के पार विनिमय पर राज्य प्रतिबंधों का ह्रास या विलोपन और इसके परिणामस्वरूप उत्पन्न हुआ उत्पादन और विनिमय का तीव्र एकीकृत और जटिल विश्वस्तरीय तंत्र।''[1]

अर्थशास्त्र में भूमंडलीकरण उदारीकरण और निजीकरण के स्तभों पर आसीन है जिसमें किसी देश विशेष के बंधनों को कम करने का प्रयास होता है ताकि समग्र विश्व में एक मुक्त व्यवस्था की स्थापना हो सके, जिसमें किसी एक देश, एक कम्पनी का अधिकार न हो। अपितु प्रतिस्पर्धा के वातावरण में मानवीय श्रेष्ठ लक्ष्यों की प्राप्ति की जा सके।

भूमंडलीकरण की इस दूरदर्शी एकीकृत अवधारणा का जनक अर्थशास्त्र के पिता एडम स्मिथ को माना जा सकता है उन्होंने ही सबसे पहले अर्थ संबंधी एक एकीकृत व्यवस्था का विचार प्रस्तुत किया था जिससे ही हस्तक्षेप मुक्त अर्थव्यवस्था का प्रचलन हुआ। एडम स्मिथ के इस प्रगतिशील विचार को पश्चिमी दुनिया ने सर्वप्रथम स्वीकार किया और अंग्रेजों ने अपने उपनिवेशों में व्यापार की प्रथा शुरू की। इसी व्यापार चक्र की नीति के आधार पर उसने अनेक देशों को अपना उपनिवेश भी बनाया, इस तरह एक समर्थ अर्थशास्त्री के विचार को एक शह और मात के खेल में बदल दिया गया।

आज वर्तमान में भूमंडलीकरण व्यवस्था के विकास और विस्तार का नेतृत्व संयुक्त राज्य अमेरिका कर रहा है। सोवियत संघ के विघटन के पश्चात् अमेरिका भूमंडलीकरण की दुनिया की एकल शक्ति बन गया। इसी एकल शक्ति ने अपनी

1

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 0
January 2017

साधन सम्पन्नता, सैन्य वर्चस्व और कूटनीतिक समझ से विश्व में एक भूमंडीकरण व्यवस्था की स्थापना की। जिसके संचालक संस्थाओं के रूप में उसने संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक, आई एम एफ की नींव रखी।

डॉ. तारा सिंह ने ' भूमंडलीकरण और हिन्दी कविता' में इस स्थिति को कुछ यू बयां किया है– ''ऐसे तो भूमंडलीकरण की तह तक अगर ईमानदारी से पहुंचा जाए, तब हमें यही पता चलता है कि यह भूमंडलीकरण अमेरीकी पूंजीवाद का उग्र रूप है, जिसने सबसे पहले प्रकृति के तत्वों से खेलना शुरू किया, जो आजकल मानव समाज के लिए खतरा बन गया है।''[2]

इस तरह भूमंडलीकरण के अगवा अमेरिका की दोहरी भूमिका का पता चलता है इसी प्रकार की दोहरी भूमिका के कारण विकासशील और विकसित देशों के मध्य से जिस भूमंडलीकरण की स्थिति बनी। उस पर कमलेश्वर ने कुछ इस भांति टिप्पणी की।

''भारत में भूमंडीकरण का जो भूचाल आया है। मुमकिन है कि विकसित पूंजवादी देशों में वह कोई कल्याणकारी शक्ल रखता हो, पर विकासशील देशों में वह शोषक की शक्ल में ही आया है।''[3]

भारत ने भी नब्बे के दाशक में पूर्ण रूप से भूमंडलीकरण की अर्थनीति को स्वीकार किया। लेकिन व्यवस्था में एकाधिकार और सांठ–गांठ का चलन जोर–शोर से बना रहा। इसी व्यवस्था असंतुलन की स्थिति में असमानता को बढ़ावा मिला। वहीं जिस मानवीय हित के लिए भूमंडलीकरण का विचार प्रस्तुत किया गया था वे

2

3

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 0
January 2017

मानवीय हित समय के साथ पीछे होते गए। जिसकी गूंज हमें कमलेश्वर जी के उपरोक्त कथन में सुनने को मिलती है।

भूमंडलीकरण के चक्र की इस आलोचना के पीछे के कारणों पर विचार किया जा सकता है क्योंकि भूमंडलीकरण अपने वास्तविक स्वरूप में तो एक समानता आधारित एकीकृत विचार हे लेकिन इसके उलट स्थिति क्यों बनी? इन कारणों की पहचान कर भूमंडलीकरण के एकीकृत विचार के साथ न्याय हो सकता है।

भूमंडलीकरण की त्रास जनक स्थितियों का कारण बनी–प्राकृतिक एवं सांस्कृति विविधता। एडम स्मिथ ने अपने मूल विचार में इन दोनों को गौण मान लिया। लेकिन इन दोनों का संबंध मानव के स्वाभाविक धरातल से है। इसी कारण से प्राकृतिक संसाधनों के अति दोहन और सांस्कृतिक विक्षोभ की जो स्थिति बनी, उसी के फलस्वरूप मानव अपनी मूल संस्कृति और प्राकृतिक वातावरण से परे होता गया। जिससे भूमंडलीकरण में प्राकृतिक विसंगति उदित हो गई। भूमंडलीकरण के सांस्कृतिक विक्षोभ के कारण परिवारों में सांस्कृतिक अस्थिरता आई। जिससे परिवारों का बिखराव होना शुरू हो गया।

भूमंडलीकरण की प्रतिस्पर्धा ने 'स्वहित' की धरणा को मनुष्य, परिवार, समाज और देश के स्तर पर स्थापित कर दिया। जिस कारण मनुष्य सबसे पहले स्वयं पर केंद्रित हो गया। यहां तक जन्म देने वाले माता–पिता तक के लिए समय समस्या खड़ी हो गई।

स्मग्रता में विचार करने पर ये जान पड़ता है कि ऐसा नहीं है कि भूमंडलीकरण के वैश्विक एकीकरण के विचार में कोई खोट था, बल्कि मानव ने उस

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 0
January 2017

विचार को स्वीकार कर, उसको अपवादों के आधार पर संचालित कर दिया। जहां सब मुक्त होना था वहां एकाधिकार बढ़ गया। जहां कीमत स्वरूप प्रतिस्पर्धा से तय होनी थी। वहां कीमत निर्धारण का आधार सांठ–गांठ आधारित हो गया। जहां वस्तुओं में प्रतिस्पर्धा होनी थी। वहां प्रतिस्पर्धा मानव, मानव के बीच होने लगी।

इसी कारण भूमंडलीकरण व्यवस्था का जो स्वरूप हमारे सामने है वह एक स्वार्थी स्वरूप सा है जिसमें कुछ बेहतर है तो विद्रुपताएं भी सर्वाधिक बनी हुई हैं।

भूमंडलीकरण के इसी स्वरूप की विद्रुपताओं को आधार बनाकर कुमुद शर्मा कहती हैं कि ''इस नव उपनिवेशवाद का स्वरूप ऊपर से आक्रामक नहीं दिखता। इसकी आक्रामकता प्रच्छन्न है यह आर्थिक उदारीकरण के नाम पर सीना तानकर आया है। इसलिए इसके विरूद्ध कोई अभियान या चुनौती नहीं है।[4–11]

निष्कर्षतः भूमंडलीकरण के नाम से जो दोहरी व्यवस्था उपजी उसने मानव को दोहरे अंतर्विरोधों के हवाले कर दिया। जिस कारण एक बड़ा मानव समूह अपनी संवेदशीलता खो बैठा।

भूमंडलीकरण की समकालीन पहचान और स्थिति को लेकर उपरोक्त वर्णन हुआ उसकी पृष्ठभूमि में हम भूमंडलीकरण और साहित्य के संबंध पर बात कर सकते हैं। भूमंडलीकरण की नीति किसी देश विशेष की व्यवस्था को आकार देती है व्यवस्था के समक्ष नवीन स्थितियां उत्पन्न करती है प्राचीन रूढ़ियों को छोड़ नवीन विचारों, समझ को स्वीकार करने को बाध्य करती है। मनुष्य, परिवार और समाज के स्तर पर एक नई वैश्विक संस्कृति का निर्माण करती है जिससे समाज में परस्पर

4

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 0
January 2017

नए अंतर्विरोधों का सृजन होता है। जैसे :– भारतीय समाज में पुरुष ने प्रेम को अपने स्वरूप में तो सहमति दी। वहीं अपनी बहन के प्रेम को स्वीकार करने की शक्ति का विकास उसमें नहीं हुआ। यही कारण है कि एक ही परिवार में ऐसे अंतर्विरोध प्रेरित मूल्य मिल जाते हैं जिसमें लड़के को प्रेम करने की आजादी है और लड़की का प्रेम करना एक अपराध सा बना हुआ है। ठीक इसी तरह के दोमुहें अंतर्विरोध को अनुभव कर एक संवेदशील प्राणी शब्दों से परखते हुए उस स्थिति पर संतुलित प्रतिक्रिया देता है। जिसे साहित्य के रूप में व्याख्यायित किया जाता है।

भूमंडलीकरण और साहित्य संबंधी जिक्र में 'साहित्य' की सबसे सार्थक टिप्पणी आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा प्रस्तुत की टिप्पणी को मान सकते हैं।

''प्रत्येक देश का साहित्य वहां के जनता की चित्तवृति का संचित प्रतिबिंब होता है तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृति के परिवर्तन के साथ–साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है।''[5]

उपरोक्त शब्दों के संदर्भ में, साहित्य में चित्तवृत्तियों के निर्माण में जो स्थितियां होती हैं उनका संबंध भूमंडलीकरण निर्मित स्थितियों से है इस तरह साहित्यिक चित्तवृत्तियों में भूमंडलीकरण अभिप्रेरण या उत्प्रेरक की भूमिका निभाता है क्योंकि स्वभावतः भूमंडलीकरण एक सतत् परिवेश है। जिसकी छाया साहित्यिक चित्तवृत्तियों में रहती है। भूमंडलीकरण और साहित्य का संबंध कारण कार्य, क्रिया–प्रतिक्रिया के समरूप सा है। समाज की विशेष स्थितियों में भूमंडलकरण की सक्रिय भूमिका हो

5

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 0
January 2017

गई है वहीं इन्हीं स्थितियों के बीच उदीप्त मानवीय क्षोभ जब शब्दबद्ध होकर अंकित होता है तो वो साहित्य लेखन की श्रेणी में आता है।

समग्रता में कहें तो, भूमंडलीकरण जहां किसी क्रिया का धरातल है वहीं साहित्य उसी क्रिया के धरातल पर दी गई– एक संतुलित प्रतिक्रिया।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में ''उपन्यास के प्रचलन, विकास एवं सृजन का श्रेय पश्चिमी देशों के लेखकों को ही है जिनसे प्रेरणा लेकर हिन्दी में भी उपन्यास रचना की जाने लगी है।''[6]

महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के ही विचार की अभिव्यक्ति/पुष्टि बालकृष्ण भट्ट जी ने भी की है। उनके अनुसार ''हम लोग जैसे और बातों में अंग्रेजी की नकल करते जाते हैं, उपन्यास का लिखना भी उन्हीं के दृष्टांत पर सीख रहे हैं।''

बालकृष्ण भट्ट जी की पंक्तियां न केवल उपन्यास अपितु साहित्यिक और समाजिक ढांचे पर हो रहे वैश्विक प्रभाव का जिक्र कर देते हैं। भारतेंदु युग के पश्चात् द्विवेदी युग में भी भूमंडलीकरण के लक्षण दिखाई पड़ते हैं द्विवेदी जी द्वारा गद्य और पद्य की भाषा के एकीकरण से संबंधित विचार को वर्डसवर्थ से प्रभावित माना जा सकता है क्योंकि ठीक ऐसी ही घोषणा 'वर्डसवर्थ' बहुत पहले कर चुके थे।

छायावाद पर 'रोमांटिसिज्म' का सीधा प्रभाव था। दोनों में प्रवृतिगत साम्य भी मिलता है। बस भाषा और परिवेश के स्तर पर भेद था। छायावाद पर अंग्रेजी प्रभाव के संबंध में आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी कहते हैं ''छायावाद की कविता की पहली

6

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 0
January 2017

दौड़ तो बंगभाषा की रहस्यात्मक कविताओं के सजीले और कोमल मार्ग पर हुई। पर उन कविताओं की बहुत कुछ गतिविधि अंग्रेजी वाक्यखंड़ों के अनुवाद द्वारा संघटित देख, अंग्रेजी काव्यों से परिचित हिन्दी कवि अंग्रेजी से तरह–तरह के लाक्षणिक प्रयोग लेकर उनके ज्यों के त्यों अनुवाद जगह–जगह अपनी रचनाओं में जड़ने लगे।''[7]

प्रगतिशील काव्यधारा जिसकी पृष्ठभूमि साम्यवाद था। उसके प्रचलन में भी 'प्रोग्रेसिव राइटर्स ऐशोसिएशन' पेरिस की अहम् भूमिका थी। प्रगतिशील काव्य का यथार्थ साम्यवाद प्रेरित यथार्थ ही था ये सभी कवि कार्ल मार्क्स के विचारों से प्रभावित थे। प्रगतिशील काव्य के ठीक बाद प्रयोगवाद में कभ्य और शैली के स्तर पर जो प्रभाव था वो पश्चिमी मुक्त विचारों से लक्षित था। अक्षेय जी ने स्वयं पर अस्तिवाद के प्रभाव को स्वीकार किया है। शमशेर ने तो स्वयं की रचना शैली को एजरा पाउंड से प्रदत स्वीकार किया है। इसी तर्ज पर समकालीन कविता की बिंब व्यवस्था और उसकी नवीन अर्थ शैली पर भी वैश्विक भूमंडलीकरण स्थितियों की नवीनता का प्रभाव दिखता है। केदारनाथ सिंह द्वारा रचित नवीन शैली की कविताएं अच्छा उदाहरण हैं।

हिन्दी साहित्य की विकास परम्परा पर वैश्विक प्रभाव को परखने से यह तो सिद्ध होता है कि भूमंडलीकरण और साहित्य का संबंध बहुत पहले का है। स्वभावतः भूमंडलीकरण का प्रसार हिन्दी साहित्य में निरंतर विस्तार पाता गया। अक्षेय द्वारा रचित 'हिरोशिमा' त्रासदी पर कविता, असाध्यवीणा के विदेशी प्रभाव को भी इसी संदर्भ में देखा जा सकता है। निराला, नागार्जुन और मुक्तिबोध के वास्तविक जीवन

7

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 0
January 2017

और रचनाओं में वैश्विक अर्थ मॉडल का एक आपद सच भी उभरता है जिसने मानव को, संघर्ष और प्रतिस्पर्धा के ताप से विगलित कर दिया है।

जहां हिन्दी काव्य परम्परा में भूमंडलीकरण लक्षित सर्जनात्मक प्रभावों को ग्रहण किया गया है वहीं हिन्दी साहित्य के गद्य में वैश्विक व्यवस्था, वैश्विक संस्कृति से उपज रही प्रतिकुल स्थितियों और विखंडित मूल्यों पर प्रतिक्रिया भी की गई है।

भूमंडलीकरण की मुक्त स्थिति से असंतुष्टि को बल मिला है। प्रतिस्पर्धा ने स्वार्थ को स्थापित किया है। भूमंडलीकरण के इसी प्रभाव को मोहन राकेश जी ने 'आधे–अधूरे' नाटक की पात्र 'सावित्री' के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। वैश्विक व्यवस्था के प्रभाव फलस्वरूप 'बाजार' राजा हो गया है। जो इसमें क्रय करने की शक्ति रखता है वही वास्तविक मानव है। मानव को बाजार ने नयी पहचान दी, नये ढंग दिए, नये मूल्य दे दिए हैं जो मानव की असंवेदनशीलता का भी आधार हो गए हैं। शहरों में वयस्कों की समस्या बढ़ती ही जा रही है। कभी कोठी बंगलों के मालिक वृद्ध आश्रमों में रहने को मजबूर हैं कुछ इसी तरह के दर्द को भीष्म साहनी ने 'चीफ की दावत' तो ऊषा प्रियवंदा ने 'वापसी' कहानी में उठाया है। 'बाजारवाद' और 'शहरीकरण' की संवेदनहीनता को उदय प्रकाश की 'तिरिछ' कहानी में उठाया गया है। अक्षेय जी ने भी 'सांप' कविता में शहरीकरण की वास्तविकता से कटू यथार्थ पर व्यंग्य कसा है।

भूमंडलीकरण की अर्थनीति में असमानता और मूल्यहीनता आम बात सी हो गयी है भ्रष्टाचार तो जैसे तरक्की, प्रगति का मॉडल सा हो गया है। साहित्य ने

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 0
January 2017

भूमंडीकरण संबंधित वैश्विक स्थितियों से उपजी समस्याओं को उभारा है और साहित्य ने ग्रहण भी किया है। साहित्य के इसी ग्रहण–त्याग के समन्वय के बीच ये भी सत्य है कि आज वैश्विक समस्याओं पर किसी भी भाषा में रचना हो सकती है। इस तरह दिनोंदिन साहित्य और भूमंडलीकरण का संबंध परस्पर आश्रित भी होता जा रहा है। साहित्य भूमंडलीकरण के प्रसार और विद्रुपताओं के आतंक दोनों को व्यक्त करने में सक्षम है। चूंकि भूमंडलीकरण नयी दुनिया का एक सास्वत् सत्य बन गया है। इस अर्थ में भी साहित्य को भी नयी दूरदर्शिता से, वैश्विक चिंतन की पृष्ठभूमि में जन्मी विद्रुपताओं को प्रकट करना चाहिए केवल समग्र भूमंडलीकरण को अर्थहीन, बेकार घोषित करके चलना एक आधार यथार्थ होगा।

हिन्दी साहित्य में भूमंडलीकरण वैश्विक प्रभाव के दो स्तर हैं जहां साहित्यिक स्तर पर संबंध ग्रहण करने का है तो रचना के भाव के स्तर पर वैश्विक नवीन संकुचित दृष्टिकोण को लक्ष्य कर उभारा गया है। जिस तरह भूमंडलीकरण प्रसार और स्वीकार्यता पाता जा रहा है, ठीक ही साहित्य की भूमिका भी उसके अनुरूप सिद्ध सी हो गयी है। हिन्दी साहित्य को भी नवीन रूप में वैश्विक मापदंडों को आत्मसात कर, जनता में उसकी प्रकृति का साधारणीकरण करना चाहिए।

सदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. ''वैश्वीकरण महान है!'' टॉम जी, वरिष्ठ सहकर्मी काटो संस्थान
2. 'भूमंडलीकरण और हिन्दी' लेख, डॉ. तारा सिंह

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 0
January 2017

3. ''भूमंडलीकरणः साहित्य और संस्कृति'' – 24 Sep, 2001 आख्यान डॉ. कमलेश्वर

4. भूमंडलीकरण और मीडिया, कुमुद शर्मा, ग्रन्थ अकादमी, दिल्ली, 2007 पृष्ठ–33

5. हिन्दी साहित्य का इतिहास, रामचंद्र शुक्ल, कान्ती पब्लिकेशन, 1929 पेज न. 21

6. 'उपन्यास रहस्यः महावीर प्रसाद द्विवेदी, सरस्वती में प्रकाशित निबंध

7. हिन्दी साहित्य का इतिहास, रामचंद्र शुक्ल, कान्ती पब्लिकेशन, 1929 पृष्ठ सं. 4–58